भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 4357
उत्तर देने की तारीख 02.04.2026

कारीगरों का अभाव

4357. **डा. अजित माधवराव गोपछड़े :**

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार इस बात से अवगत है कि कई पारंपरिक भारतीय संगीत वाद्ययंत्र विलुप्त होने की कगार पर हैं, और ऐसे वाद्ययंत्रों के निर्माण और मरम्मत का दुर्लभ कौशल रखने वाले उच्च कोटि के कुशल कारीगरों की भारी कमी है;
(ख) क्या ऐसे कारीगरों की कमी से भारत की संगीत विरासत और देशीय प्रणालियों को हानि हो रही है;
(ग) क्या सरकार राज्य सरकारों को ऐसे कारीगरों की पहचान करने, उनका मानचित्रण करने और डेटाबेस बनाने की सलाह देने का विचार रखती है; और
(घ) क्या युवा पीढ़ी को कौशल अंतरण को बढ़ावा देने और उनकी आजीविका और सम्मान सुनिश्चित करने के लिए उपयुक्त वित्तीय और सामाजिक सहायता प्रदान करने के लिए कदम उठाने पर विचार किया जा रहा है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क) से (घ): सरकार के पास ऐसे कोई प्रमाणित आंकड़े नहीं हैं जो यह दर्शाएं कि पारंपरिक भारतीय वाद्ययंत्र विलुप्त हो चुके हैं या विलुप्त होने की कगार पर हैं। हालांकि, सरकार इस बात से अवगत है कि कई संगीत वाद्ययंत्रों के लिए उच्च कोटि के कुशल कारीगरों की कमी है। इनके सांस्कृतिक महत्व को पहचानते हुए, संस्कृति मंत्रालय क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों और संगीत नाटक अकादमी के माध्यम से इनके परिरक्षण और बढ़ावा देने के लिए कई उपाय करता है।

संस्कृति मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संगठन, संगीत नाटक अकादमी (एसएनए), विरासत वाद्ययंत्रों में प्रशिक्षण आयोजित करने और कौशल हस्तांतरण के लिए गुरु-

शिष्य परंपरा कार्यक्रम कार्यान्वित करने के साथ ही संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार जैसे पुरस्कारों के माध्यम से वित्तीय सहायता और मान्यता भी प्रदान करती है।

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र दुर्लभ वाद्ययंत्रों की पहचान और दस्तावेजीकरण करते हैं, प्रशिक्षण और कार्यशालाएं आयोजित करते हैं, त्योहारों के माध्यम से उन्हें बढ़ावा देते हैं, और कारीगरों को वाद्ययंत्रों के प्रदर्शन और बिक्री के लिए मंच प्रदान करते हैं।

इसके अलावा, पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र और संगीत नाटक अकादमी ने दुर्लभ और विलुप्त वाद्ययंत्रों के संग्रहालय भी स्थापित किए हैं।

*****